लज्जतो को खत्म कर देने वाली मौत

मौलाना जलील अहसन नदवी रह.

राहे अमल हिन्दी.

‘नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

* तिर्मेज़ी, रावी अबू सईद खुदरी रदी.

एक दिन रसूलुल्लाहﷺ नमाज के लिये मस्जिद मै तशरीफ लाये, आप ने देखा की कुछ लोग खिलखिला कर हंस रहे है, आपﷺ ने फरमाया अगर तुम लज्जतो को खत्म कर देने वाली मौत को ज्यादा याद करते तो वो तुम्हे हंसने से रोक देती, मौत को बहुत ज्यादा याद करो जो तमाम लज्जतो को खत्म कर देने वाली है और कबर हर दिन ये कहती है की मै मुसाफिरत का घर हु, मै तनहाई की कोठरी हु, मिट्टी का घर हु, और जब कोई मोमिन बन्दा कबर मै दफन किया जाता है तो कबर उसका इस्तिकबाल करती है कहती है की तू मेरी पीठ पर चलने वालो मै मुझे सबसे ज्यादा महबूब था, तो आज तू मेरी

जिम्मेदारी मै दे दिया गया है तो तू देखेगा की तेरे साथ कितना अच्छा सुलूक करती हु.

आपﷺ ने फरमाया की उस मोमिन बन्दा के लिये वो कबर इतनी कुशादा हो जाती है जहा तक उसकी निगाह पहुंचे और उसके लिये जन्नत की तरफ एक दरवाजा खोल दिया जाता है और जब कोई बदकार या काफिर बन्दा दफन किया जाता है तो कबर उसका इस्तिकबाल (स्वागत) नही करती कहती है तू मेरे नजदीक मेरी पीठ पर चलने वालो मै सबसे ज्यादा नापसन्दीदा आदमी था अब जबकि तुझे मेरे हवाले कर दिया गया है और मेरे पास आ गया है तो तू देखोगा की मै तेरे साथ कितना बुरा सुलूक करती हु.

आपﷺ ने फरमाया की फिर कबर उसके लिये भिचेगी, और तग होगी यहा तककि उसकी पस्लियां एक दूसरे मै घुस जायेगी, ये फरमाते हुवे आपﷺ ने एक हाथ की उगलियो को दूसरे हाथ की उगलियो मै मिलाया, उसके बाद फरमाया उस पर 70 अजदेह सवार कर दिए जायेगे जिन मै से हर एक इतना जहरीला होगा की जमीन पर अगर वो फूक मारे तो उसके जहर के असर से हमेशा के लिये जमीन कुछ भी पैदा

करने के काबिल ना रह जायेगी.

फिर ये सब अजदेह उसको डसेगे और नोचेगे, ऐसा ही उसके साथ होता रहेगा, यहा तककि हिसाब का दिन आ जायेगा और वो अल्लाह की अदालत मै हिसाब देने के लिये पेश हो जायेगा, उसके बाद आपﷺ ने फरमाया की कबर आदमी के लिये जन्नत के बागो मै से एक बाग बनती है या जहन्नम के गढो मै से एक गढा.

मतलब जब कोई शख्स अपनी हद तक दुनिया मै बुराईयो से लडता और आखिरत की तैयारी करता हुवा मरता है तो इस बीच वाली जिन्दगी मै जिसे कबर कहा जाता है उसके साथ अल्लाह मेहरबानी का सुलूक करता है और वो खुशी महसूस करता है, और जो शख्स जिन्दगी भर बुरे काम करता रहा और बगैर तौबा मर गया तो उसके साथ कुछ इस तरह का मामला होगा जैसा की अदालत मै पेश होने से पहले हवालात मै होता है, हदीस के आखिरी टुकडे का मतलब ये है की आदमी अगर चाहे तो अपने अमल से कबर वाली जिन्दगी को आराम और सुकून की जिन्दगी बनाए या फिर बदकारी की हालत मै ये जिन्दगी गुजारे और फिर कबर के अजाब से दोचार हो.